चरखा बनाम कम्प्यूटर

अभी थोडे दिनों पहले गुजरात विधापीठ में बु. शिक्षण से संबंधित एक कार्यशाला का आयोजन था मेरी वहॉ कुछ छात्रो के साथ बातचित हुई। उनकी दलिल थी कि ''सुबह सुबह में हमें यह चरखे चलाने के लिए व हाथ शाल पर (बुनाई) काम करने के लिए क्यों बाध्य किया जाता है हमें तो लगता है यह चरखे की अभी कोई जरूरत नहीं है।

अभी चरखे की जगह कम्प्यूटर की कक्षा लगायी जाय या तो हमारी परीक्षाओं के लिए पढ़ने दिया जाय तो अच्छा रहें।''

यह सुनकर काफी लोगों को उन पर चिढ हो सकती है पर उनका दोष नहीं है हमारी सामाजिक व आर्थिक संरचना उन्हें ऐसा सोचने पर मजबुर कर रही है यह सत्य है। बुनियादी शिक्षण प्रक्रिया में हाथ के काम को महत्व दिया गया है , समाज उपयोगी उत्पादक कार्य को महत्व दिया गया है। और शायद चरखा चलाने की गांधीवादी मुग्धता का नोस्टेलेजिया हमें बु. शिक्षण मे सतत् परिवर्तन शाला श्रम मूलक कार्य को जोडने मे रोकता रहा।पर एक बात तो सोचनी ही पडेगी क्या कम्प्यूटर पर कार्य करते हुए समाज उपयोगी उत्पादन कार्य होता है?

कम्प्यूटर चलाते वक्त हमारे अंग संचालन मे सिर्फ उगलियॉ कि – बोर्ड व माउस के साथ कार्य करती है और अधिकतर दिमाग द्वारा हम कम्प्यूटर संचालित करते है हमारे दुसरे अंगो का उसमे हिस्सा नही नहावत है। कम्प्यूटर चलाना और अन्य शारिरिक श्रम करने मे बहुत फर्क है।

यहॉ पर में यह कतई नहीं कहना चाहती कि हमें कम्प्युटर सिखना ही नहीं चाहिए। न में कोई र्नस्टेलिजीया था में जीने वाली गांधी भक्त बुढ़िया हुॅ। मैं तो चाहती हुॅ जो हाथ कम्प्युटर चलाना जानते हो वह चरखा या उसके जैसा सृजनकारी श्रम भी करें। हम थोडा ज्यादा सुक्ष्म सोचें तो कम्प्युटर के उपयोग के साथ हमें काफी सुविधाऍ मिल गई है जिसकी वजह से कई अन्य कार्यो के लिए हम समय भी बचा पा रहे है पर बचे हुए समय मे हम क्या करते है? इन्टरनेट सर्फिगं करते है , मोबाईल पर एस.एम.एस करते हैं या बेवजह मोबाईल पर बतियाते रहते है। देखें कि पूरे दिन में क्या हम कोई सृजन कार्य करते है? आगे लिखी क्रियाओं से हमें बिना वजह के अतिरिक्त मानसिक आंदोलनों का सामना करना पड़ता है जिसकी वजह से हमें जिंदगी मे सुकुन के पल नसीब नहीं।

हम सब कुछ मिल जायें इसके लिए दिनभर मानसिक रूप से बहुत भागते है और रात की नींद को हमने बेच दी है कोल सेंटर के नाम या उसके जैसे अन्य कामों के नाम । हम **''टेकनो कुली''** बन चुके है।

बु.शिक्षण में दो बहुत अच्छे शब्द है ''समवाय '' और ''अनुबंध'' ''समवाय'' शब्द का अर्थ है नित्य संबंध , प्रगाढ़ संबंध। कार्य या श्रम के अनुभव से कार्य और कारण का संबंध जुड़ा है वृक्ष में बीज और बीज में वृक्ष होते हुए भी वह अलग दिख सकते है फिर भी दोनों के बिच एक प्रगाढ़ संबंध है। ऐसा ही संबंध श्रम और ज्ञान के बिच है। बु. शिक्षा में उद्योग की क्रिया मे विचार व मनुष्य के साथ श्रम के जरिए संपर्क व संबंध बनाना होता है, इससे अनकेविध शक्तिओं की जानकारीओं का, समझ का एकीकृत विकास होता है परिणाम स्वरूप शिक्षण की प्रक्रिया अखंड़ित रहती है।

दुसरा शब्द है ''अनुबंध'' इस शब्द में ''अनु'' का अर्थ ''अनुसरना'' (to follow) ऐसा है।

श्रम प्रवृति पहले हो बाद में उसके संबंध मे कोई विषय वस्तु का शिक्षण हो , श्रम अनुभव के आधार पर और संबंध से विषय वस्तु को जोडा जाय और शिक्षण कार्य हो वह अनुबंध है।

इसी संदर्भ मे आज से सालो पहले बु.शिक्षा में चरखा उद्योग को शामिल किया गया था। उस वक्त समाज व देश के अर्थतंत्र को मजबूत करने हेतु चरखा चलाते हर बालक सिखे ऐसा गांधीजी को लगा था और यह बात स्वराज प्राप्ति के साथ भी जुडी थी। आज लोग चरखे को गैर जरूरी समझने लगे और कम्प्यूटर को ज्यादा जरूरी। हो सकता है कल उठकर यह कम्प्यूटर भी गैर जरूरी हो जाय। – हमें सोचना चाहिए कि क्या कम्प्यूटर हमारे बालकों में जीवन जीने का कौशल विकसित कर सकता है? इसके द्वारा शिक्षा के कोई पहलुओं को छुआ जा सकता है? उसका अर्थतंत्र के उत्थान के साथ कितना संबंध है। क्या कम्प्युटर बु. शिक्षा में काम द्वारा शिक्षण की संकल्पना पर पुरा उतरता है? समाज की मुलभुत जरूरीयत में इसकी क्या भुमिका है? अब चरखे के बारे में सोचे, चरखा चलाते वक्त हम बच्चो के साथ गिर्यस के बारे मे बातचीत करके समझ बना सकते है? सुत के तांत की तन्यता को जॉचते परखते बल, चक्रगति, हाथ को कितने अंश के कोण पर रखे आदि भोतिक शास्त्र के कुछ पहलुओं को छु सकते है? चरखा चलाते वक्त हम सारा ध्यान सुत कैसे अच्छा कंते उसके उपर लगाते है? क्या यह ध्यान की प्रक्रिया नही हो सकती है? क्या कम्प्युटर के साथ ऐसा सम्भव है? हमारे रोज बरोज का मानसिक तनाव सुत कांत ने से कम कर सकते है क्या? सोचे! सृजन जहॉ होता है, **तब जो सृजन के साथ संल्गन है उसके इगो को तो इससे तृष्टी मिलती ही है साथ मे एक प्रकार का शांतिमय सुखद एहेसास भी होता है। यह बात मनोवैज्ञानिक भी मानते है, शायद यहीं है बुनियादी शिक्षा में समवाय ज्ञान का आध्यात्मिक अभिगम।**

आज की तनाव ग्रस्त और हमेंशा जल्दी में रहेनी वाली जिंदगी को सुकुन के पल प्राप्त करने के लिए गुरूओं स्वामीओं के पास आर्ट ऑफ लिविंग सिखने जाना पड़ता है। क्या चरखा या तो उसके जैसे ही सृजन की कोई किया ध्यान के साधन नहीं बन सकते? ध्यान क्या है? ध्यान होश पूर्वक किया गया श्रम है।

यहॉ मैं यह साबित करना नहीं चाहती कि चरखा या कम्प्युटर में कौन सी चिज ज्यादा अच्छी ! शायद यह तुलना ही गलत है यह दो तो हमनें पकड़े हुए खुंटे मात्र है। एक खुंटे के बाद दुसरा पुराना हो सकता है। आज की परिस्थिती में समाज को , देश को किस प्रकार के संतुलित व्यक्तियों की और उद्यम जरूरत होगी हमें तय करना है।

चाहे ग्रामीण समाज हो या शहरी समाज शांति और मन के feel good factor की आवश्यकता तो सभी को है। और बच्चे तो बच्चे होते है क्या ग्रामीण क्या शहरी। यह तो हम उन्हें भान करता हैं व बॉटते है।

चलो मान लें हम चरखा न चलाये पर मशीन से सिलाई तो कर सकते है। सिलाई से संबधित समवायी शिक्षा के संदर्भ में देखें तेा सिलाई करते हुए मशीन के छोटे–मोटे चक्रो का एक दुसरे से संबंध। मशीन की गति का आधार क्या? मशीन की सुई 1 मिनीट मे कितनी बार उपर निचे होती है? मशीन की अंदुरूनी यंत्र , उच्चालन, मशीन की सार–संभाल, तेल डालना क्यों जरूरी? मशीन के भाग सफाई लिए अलग करना, जोडना, मशिन कैसे बना, किसने बनाया उसका इतिहास, मशीन पर काम करते वक्त प्रकाश की दिशा, कपड़े के प्रकार, कटाई काम, शरीर के लिए कपड़े बनाने है, इसलिए शरीर की सममिती आकृति समज़ना (शायद अच्छी कपड़ा कटाई करने वाला Body Anotomy अच्छे से समझने वाला बने या अच्छा सर्जन भी बन सकता है। सिंलाई करने की जगह को स्वच्छ रखना (इसी से जीवन के अन्य कार्य के लिए अच्छी सुघड़ आदतें विकसीत हो सकती है।) इस तरह से ध्येयों का समेकित रूपांकन समवायी ज्ञान से बुनियादी शिक्षा में है। आगे बताई गई पूरी बात शायद सिलाई संबंधित वेबसाईट पर सीधे सीधी

मिल भी सकती है। पर क्या वेबसाईड की जानकारी और सिंलाई करने की प्रक्रिया द्वारा मिली सिख में कोई फर्क है या नहीं?

सिंलाई या सृजनात्मक काग्र बालक दत्तवित्त होकर करेंगे तो ध्यान की ही प्रक्रिया है।

पर यह सारी बात हमारे गले उतरते देर लगेगी क्योंकि अभी की स्थिती में हमारे जीवन के मूल सिद्धांतों को समाज के कथित मार्गदर्शकों द्वारा भूंमडलीकरण की चाशनी में डूबोकर परोसा जा रहा है। और हम सब ऐसे–ऐसे खुंटों के फर्मदार बन चुके है कि यह समझ नहीं पा रहे है कि खुंटे ने हमें पकड़ा है या खुंटे को हम पकड़े हुए है।